an>

Title:Need to establish a Vishwa Vedic Sahitya Sangrahalaya.

डॉ. सत्यपाल सिंह (बागपत) : दुनियाभर के बुद्धिजीवियों ने लगभग सर्वसम्मति से यह माना है कि वेद व वैदिक साहित्य प्राचीनतम हैं। चारों वेदों की 1131 शाखाएं थी। पर देश के इतिहास में राजनैतिक व सामाजिक अंधकार का एक ऐसा लंबा युग आया कि दुनिया का सबसे समृद्ध, पूर्णतया वैज्ञानिक, वैश्विक और सर्वांगीण विकास का रास्ता दिखाने वाला साहित्य धीरे-धीरे नÂटप्रायः हो गया। आज देश के अंदर वेदों को केवल आठ शाखाएँ सुरक्षित हैं तथा पूरी दुनिया में पूर्ण व आंशिक केवल मात्र 29 शाखाएँ जिन्दा हैं। देश में जगह-जगह जैसे तंजौर, बंगलौर, शृंगेरी, जोधपुर, बड़ौदा, ग्वालियर, अजमेर, बनारस, झज्जर एवं पटना इत्यादि स्थानों पर विभिन्न पुस्तकालयों में आज भी वैदिक साहित्य के लाखों हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध हैं। कुछ ग्रंथों की हालत अत्यंत जर्जर है। वेद व वैदिक साहित्य को यूनिसेफ ने भी विश्व सम्पदा घोÂि◌ात किया है।

अतः मेरा माननीय सांस्कृतिक मंत्री जी से आग्रह है कि वेदों व वैदिक साहित्य की लुप्त अथवा अप्राप्त शाखाओं / ग्रंथों को विश्वभर से माइक्रो फिल्म व डिजीटाइज करके मंगवाने की कोशिश करेंगे तथा पूरे देश में विभिन्न पुस्तकालयों से पुस्तकों की कॉपी कराकर के एक वृहद विश्व वैदिक साहित्य संग्रहालय की स्थापना करने का पूयत्न करेंगे ताकि विश्व के बुद्धिजीवियों के लिए एक शोध केन्द्र बन सके तथा आगे आने वाली पीढ़ियाँ अपनी संस्कृति पर गर्व कर सकें।